नित्य पाठ

Nijanand App

श्री तारतम

निजनाम श्री जी साहिब जी, अनादि अछरातीत।
सो तो अब जाहिर भए,सब विध वतन सहित।।1 ।।
श्री स्यामा जी वर सत्य हैं,सदा सत सुख के दातार।
विनती एक जो वल्लभा,मो अंगना की अविधार।।2।।
वाणी मेरे पिउ की, न्यारी जो संसार।
निराकार के पार थें,तिन पार के भी पार।।3 ।।
अंग उतकण्ठा उपजी,मेरे करना एह विचार।
ए सत वानी मथ के,लेउँ जो इन को सार।।4 ।।
इन सार में कई सतसुख, सो मैं निरने करूँ निरधार।
ए सुख देउँ ब्रह्मसृष्ट को,तो मैं अंगना नार।।5 ।।
जब ए सुख अंग में आवहीं,तब छूट जाए विकार।
आयो आनन्द अखण्ड घर को,श्री अछरातीत भरतार।।6 ।।

Nijanand App

प्रगट वाणी

अब लीला हम जाहेर करें, ज्यों सुख सैयां हिरदे धरें।
पीछे सुख होसी सबन, पसरसी चौदे भवन।।7।।
अब सुनियो ब्रह्मसृष्ट विचार, जो कोई निज वतनी सिरदार।
अपनों धनी श्री स्यामा स्याम, अपना वासा है निजधाम।।8।।
सोई अखंड अछरातीत घर, नित वैकुंठ मिने अछर।
अब ए गुझ करूं प्रकास, ब्रह्मानंद ब्रह्मसृष्ट विलास।।9।।
ए वानी चित दे सुनियो साथ, कृपा करके कहे प्राणनाथ।
ए किवकर जिन जानो मन,श्रीधनीजी ल्याए धामथें वचन।।10।।
सो केहेती हूं प्रगट कर, पट टालूं आड़ा अंतर।
तेज तारतम जोत प्रकास, करूं अंधेरी सबको नास।।11।।
अब खेल उपजे के कहूं कारन, ए दोऊ इछा भई उतपन।
बिना कारन कारज नहीं होए, सो कहूं याके कारन दोए।।12।।

Nijanand App

ए उपजाई हमारे धनी, सो तो बातें हैं अति घनी।
नेक तामें करूं रोसन, संसे भान देऊं सबन।।13।।
अब सुनियो मूल वचन प्रकार,जब नहीं उपज्यो मोह अहंकार।
नाहीं निराकार नाहीं सुन्य, ना निरगुन ना निरंजन।।14।।
ना ईश्वर ना मूल प्रकृती, ता दिन की कहूं आपा बीती।
निज लीला ब्रह्म बाल चरित्र, जाकी इछा मूल प्रकृत।।15।।
नैन की पाओ पल में इसारत, कई कोट ब्रह्मांड उपजत खपत।
इत खेल पैदा इन रवेस, त्रैलोकी ब्रह्मा विष्णु महेस।।16।।
कई विध खेले यों प्रकृत, आप अपनी इछासों खेलत।
या समे श्री वैकुंठ नाथ, इछा दरसन करने साथ।।17।।
अछर मन उपजी ए आस, देखों धनीजी को प्रेम विलास।
तब सखियों मन उपजी एह, खेल देखें अछर का जेह।।18।।

Nijanand App

तब हम जाए पियासों कही, खेल अछर का देखे सही।
जब एह बात पियाने सुनी, तब बरजे हांसी करने घनी।।19।।
मने किए हमको तीन बेर, तब हम मांग्या फेर फेर फेर।
धनी कहे घरकी ना रेहेसी सुध,भूलसी आप ना रेहेसी ए बुध।।20।।
तो मने करत हैं हम, हमको भी भूलोगे तुम।
तब हम फेर धनीसों कह्या, कहा करसी हमको माया।।21।।
तब हम मिलके कियो विचार, कह्या एक दूजी को हूजो हुसियार।
खेल देखनकी हम पियासों कही,तब हम दोऊ पर आग्या भई।।22।।
ए कहे दोऊ भिंन भिंन, खेल देखन के दोऊ कारन।
उपज्यो मोह सुरत संचरी, खेल हुआ माया विस्तरी।।23।।
इत अछर को विलस्यो मन, पांच तत्व चौदे भवन।
या में महाविष्णु मन मनथें त्रैगुन,ताथें थिर चर सब उतपन।।24।।

Nijanand App

या विध उपज्यो सब संसार, देखलावने हमको विस्तार।
जो आग्या भई हम पर, तब हम जान्या गोकुल घर।।25।।
ज्यों नींदमें देखिए सुपन, यों उपजे हम ब्रज वधू जन।
उपजत हीं मन आसा घनी, हम कब मिलसी अपने धनी।।26।।
जेती कोई हैं ब्रह्मसृष्ट, प्रेम पूरन धनी पर द्रष्ट।
कंसके बंध वसुदेव देवकी, इत आई सुरत चत्रभुज की।।27।।
सुरत विष्णु की चत्रभुज जोए, दियो दरसन वसुदेव को सोए।
पीछे फिरे केहेके हकीकत, अब दोए भुजा की कहूं विगत ।।28।।
मूल सुरत अछर की जेह, जिन चाह्या देखों प्रेम सनेह।
सो सुरत धनीको ले आवेस, नंद घर कियो प्रवेस।।29।।
दो भुजा सरूप जो स्याम, आतम अछर जोस धनी धाम।
ए खेल देख्या सैयां सबन, हम खेले धनी भेले आनंद घन।।30।।

Nijanand App

बाल चरित्र लीला जोबन, कई विध सनेह किए सैयन।
कई लिए प्रेम विलास जो सुख, सो केते कहूं या मुख।।31।।
ए कालमाया में विलास जो करे, सो पूरी नींद में सब बिसरे।
पूरी नींद को जो सुपन, कालमाया नाम धराया तिन।।32।।
तब धाम धनिएं कियो विचार, ए दोऊ मगन हुए खेलें नर नार।
मूल वचन की नाहीं सुध, ए दोऊ खेलें सुपने की बुध।।33।।
एह बात धनी चितसों ल्याए, आधी नींद दई उड़ाए।
अग्यारे वरस और बावन दिन, ता पीछे पोहोंचे वृन्दावन।।34।।
तहां जाए के बेन बजाई, सखियां सबे लई बुलाई।
तामसियां राजसियां चलीं, स्वातसियां सरीर छोड़ के मिलीं।।35।।
और कुमारका बृज वधू संग जेह, सुरत सबे अछर की एह।
जो व्रत करके मिली संग स्याम, मूल अंग याके नाहीं धाम।।36।।

Nijanand App

बेन सुनके चली कुमार, भव सागर यों उतरी पार।
इनकी सुरत मिली सब सखियों मांहे, अंग याके रासमें नांहे।।37।।
या विध मुक्त इनों की भई, कुमारका सखियां जो कही।
ए जो अग्यारे बरस लों लीला करी, कालमाया तितही परहरी।।38।।
कछू नींद कछू जाग्रत भए, जोगमाया के सिनगार जो कहे।
जोगमाया में खेले जो रास, आनन्द मन आनी उलास।।39।।
जोगमाया में खेल जो खेले, संग जोस धनी के भेले।
जोगमाया में बाढ़्यो आवेस, सुध नहीं दुख सुख लवलेस।।40।।
फेर मूल सरूपें देख्या तित, ए दोऊ मगन हुए खेलत।
जब जोस लियो खेंच कर, तब चित चौंक भई अछर।।41।।
कौन बन कौन सखियां कौन हम, यों चौंक के फिरी आतम।
रास आया मिने जाग्रत बुध, चूभ रही हिरदे में सुध।।42।।

Nijanand App

कई सुख रास में खेले रंग, सो हिरदे में भए अभंग।
या विध रास भयो अखंड, थिर चर जोगमाया को ब्रह्मांड।।43।।
तब इत भए अंतरध्यान, सब सखियां भई मृतक समान।
जीव ना निकसे बांधी आस, करने धनीसों प्रेम विलास।।44।।
विरह सैयोंने कियो अत, धनी दियो आवेस फेर आई सुरत।
तब सैयों को उपज्यो आनंद, सब विरहा को कियो निकंद।।45।।
आया सरूप कर नए सिनगार, भजनानंद सुख लिए अपार।
दोऊ आतम खेले मिने खांत, सुख जोस दियो कई भांत।।46।।
कई विरह विलास लिए मिने रात, अंग आनंद भयो जोलों प्रात।
रास खेल के फिरे सब एह, साथ सकल मन अधिक सनेह।।47।।
पीछे जोगमाया को भयो पतन, तब नींद रही अछर सैयन।
व्रज लीलासों बांधी सुरत, अखंड भई चढ़ आई चित।।48।।

Nijanand App

अछर चितमें ऐसो भयो, ताको नाम सदा सिव कह्यो।
बृज रास दोऊ ब्रह्मांड, ए ब्रह्म लीला भई अखंड।।49।।
बृज रास लीला दोऊ मांहे, दुख तामसियों देख्या नांहें।
प्रेम पियासों ना करे अंतर, तो ए दुख देखे क्यों कर।।50।।
कछुक हमको रह्यो अंदेस, सो राखे नहीं धनी लवलेस।
ता कारन ए भयो सुपन, हुए हुकमें चौदे भवन।।51।।
कालमाया को ए जो इंड, उपज्यो और जाने सोई ब्रह्मांड।
ए तीसरा इंड नया भया जो अब, अछर की सुरत का सब।।52।।
याही सुरत की सखियां भई, प्रतिबिंब वेद रूचा जो कही।
जाको कह्यो ऊधो ग्यान जोगारंभ,सो क्यों माने प्रेमलीला प्रतिबिम्ब।।53।।
जो ऊधो ने दई सिखापन, सो मुख पर मारे फेर वचन।
याही विरह में छोड़ी देह, सो पोहोंची जहां सरूप सनेह।।54।।

Nijanand App

अछर हिरदे रास अखंड कह्यो, ए प्रतिबिंब साथ तहां पोहोंचयो।
ए प्रतिबिंब लीला भई जो इत, सो कारन ब्रह्मसृष्ट के सत।।55।।
जो प्रगट लीला न होवे दोए, तो असल नकल की सुध क्यों होए।
ता कारन ए भई नकल, सुध करने संसार सकल।।56।।
सारे अर्थ तब होवें सत, जो प्रगट लीला दोऊ होवें इत।
याही इंड में श्री कृष्णजी भए, सो अग्यारे दिन बृज मथुरा रहे।।57।।
दिन अग्यारे ग्वालो भेस, तिन पर नहीं धनी को आवेस।
सात दिन गोकुल में रहे, चार दिन मथुरा के कहे।।58।।
गज मल कंस को कारज कियो, उग्रसेन को टीका दियो।
कला ग्रह में दरसन दिए जिन, आए छुडाए बंध थें तिन।।59।।
वसुदेव देवकी के लोहे भांन, उतारयो भेख किए अस्नान।
जब राजबागे को कियो सिनगार,तब बल पराक्रम ना रह्यो लगार।।60।।

Nijanand App

आय जरासिंध मथुरा घेरी सही, तब श्रीकृष्णजीको अति चिंता भई।
यों याद करते आया विचार, तब कृष्ण विष्णुमय भए निरधार।।61।।
तब बैकुंठ में विष्णु ना कहे, इत सोले कला संपूरन भए।
या दिन थें भयो अवतार, ए प्रगट वचन देखो विचार।।62।।
सिसुपाल की जोत वैकुण्ठ गई, समाई श्री कृष्ण में तित ना रही।
आउध अपने मंगाए के लिए, कई बिध जुध असुरोंसों किए।।63।।
मथुरा द्वारका लीला कर, जाए पोहोंचे विष्णु बैकुंठ घर।
अब मूल सखियां धामकी जेह, तिन फेर आए धरी इत देह।।64।।
उमेदां तामसियां रही तिन बेर, सो देखन को हम आइयां फेर।
इन ब्रह्मांड को एह कारन, सुनियो आतम के श्रवन।।65।।
रास खेलते उमेदां रहियां तित, सो ब्रह्मसृष्ट सब आइयां इत।
यामें सुरत आई स्यामाजी की सार, मतू मेहेता घर अवतार।।66।।

Nijanand App

कुंवरबाई माता को नाम, उत्तम काइथ उमरकोट गाम।
आए श्री देवचन्दजी नौतनपुरी, सुख सबों को देने देह धरी।।67।।
इन इत आए करी बड़ी खोज, चाहे धनी को मूल संजोग।
अंग मूल उपजी ए दृष्ट, सास्त्र सबद खोजे कई कष्ट।।68।।
चौदे बरसलों नेष्टा बंध, वचन ग्रहे सारी सनंध।
कई जप तप किए व्रत नेम, सेवा सरूप सनेह अति प्रेम।।69।।
कई कसनी कसी अति अंग, प्रेम सेवामें ना कियो भंग।
कई कसौटी करी दुलहिन, सो कारन हम सब सैयन।।70।।
पिया जी किए अति प्रसंन, तीन बेर दिए दरसन।
तारतम बात वतन की कही, आप धाम धनी सब सुध दई।।71।।
धरयो नाम बाई सुन्दर, निज वतन देखाया घर।
इत दया करी अति घनी, अंदर आए के बैठे धनी ।।72।।

Nijanand App

दियो जोस खोले दरबार, देखाया सुन्य के पार के पार।
ब्रह्मसृष्ट मिने सुन्दरबाई, ताको धनीजीएं दई बड़ाई।।73।।
सब सैयों मिने सिरदार, अंग याही के हम सब नार।
श्री धामधनीजी की अरधंग, सब मिल एक सरूप एक अंग।।74।।
श्री धाम लीला बैकुंठ अखंड, बृज रास लीला दोऊ ब्रह्मांड।
ए सब हिरदेमें चढ आए, ज्यों आतम अनभव होत सदाए ।।75।।
अब ए केते कहूं प्रकार, निजधाम लीला नित बड़ो विहार ।
अछरातीत लीला किसोर, इत सैयां सुख लेवें अति जोर ।।76।।
मोहोल मंदिर को नाहीं पार, धाम लीला अति बड़ो विस्तार।
इन लीला की काहूं ना खबर, आज लगे बिना इन घर।।77।।
ब्रह्मसृष्ट बिना न जाने कोए, ए सृष्ट ब्रह्मथें न्यारी न होए।
सो निध ब्रह्मसृष्ट ल्याईयां इत,ना तो ए लीला दुनियामें कित।।78।।

Nijanand App

ए बानी धनी मुखथें कहे, सो ए दुनिया क्यों कर लहे।
गांगजी भाई मिले इन अवसर, तिन ए वचन लिए चित धर।।79।।
कर विचार पूछे वचन, नीके अर्थ लिए जो इन।
जब समझाई पार की बान, तब धनी की भई पेहेचान।।80।।
अपने घरों लिए बुलाए, सेवा करी बोहोत चित ल्याए।
सनेहसों सेवा करी जो घनी, पेहेचान के अपना धाम धनी।।81।।
तब श्री मुख वचन कहे प्राणनाथ, ढूंढ काढ़नो अपनो साथ।
माया मिने आई सृष्ट ब्रह्म, सो बुलावन आए हैं हम ।।82।।
हम आए हैं इतने काम, ब्रह्मसृष्ट लेने घर धाम।
तब गांगजीभाई पायो अचरज मन, कौन मानसी पारके वचन।।83।।
कह्या ब्रह्मसृष्ट क्यों मिलसी, चाल तुमारी क्यों चलसी।
मोहजल पूर तीखा अति जोर, नख अंगुरी को ले जाए तोर।।84।।

Nijanand App

तरंग बडे मेर से होए, इत खड़ा ना रेहेने पावे कोए।
लेहेरें पर लेहेरें मारे घेर, मांहें देत भमरियां फेर ।।85।।
आड़े टेढ़े मांहें बेहेवट, विक्राल जीव मांहें विकट।
दुखरूपी सागर निपट, किनार बेट न काहूं निकट।।86।।
ऊंचा नीचा गेहेरा गिरदवाए, कठन समया इत पोहोंच्या आए।
हाथ ना सूझे सिर ना पाए, इन अंधेरी से निकस्यो न जाए।।87।।
चढ़्यो मायाको जोर अमल, भूलियां आप मांहें घर छल।
ना सुध धनी ना मूल अकल, इन मोहजल को ऐसो बल।।88।।
वचन बेहद के पार के पार, सो क्यों माने हद को संसार।
त्रैगुन महाविष्णु मोह अहंकार, ए हद सास्त्रों करी पुकार।।89।।
ब्रह्मसृष्ट भी धरे मोह के आकार, सो इत आवसी कौन प्रकार।
तब श्री धनीजीएं कहे वचन, बेहेर द्रष्ट होसी रोसन।।90।।

Nijanand App

ए बंधेज कियो अति जोर, रात मेट के करसी भोर।
प्रतछ प्रमान देसी दरसन, ए लीला चित धरसी जिन।।91।।
साथ कारन आवसी धनी, घर घर वस्तां देसी घनी।
साथ मांहें इत आरोगसी, विध विध के सुख उपजावसी।।92।।
अचरा पकर पिउ देखलावसी, एक दूजी को प्रेम सिखलावसी।
ए लीला बढ़सी विस्तार, साथ अंग होसी करार ।।93।।
तब बानी को करसी विचार, सब माएने होसी निरवार।
तब आवसी ब्रह्मसृष्ट, जाहेर निसान देखसी दृष्ट।।94।।
ए बंधेज कियो उत्तम, पर धामकी निध सो कही तारतम।
जिन सेती होवे पेहेचान, नजरों आवे सब निसान।।95।।
तब गांगजी भाई पाए मन उछरंग, किए करतब अति घनें रंग।
सनेहसों सेवा करी जो अत, पेहेचानके धाम धनी हुए गलित।।96।।

Nijanand App

साथसों हेत कियो अपार, सुफल कियो अपनो अवतार।
मैं श्रीसुन्दरबाई के चरने रहूं, एह दया मुख किन विध कहूं।।97।।
कह्यो ताको इन्द्रावती नाम, ब्रह्मसृष्ट मिने घर धाम।
मों पर धनी हुए प्रसन्न, सोंपे धाम के मूल वचन।।98।।
आदके द्वार ना खुले आज दिन,ऐसा हुआ ना कोई खोले हम बिन।
सो कुंजी दई मेरे हाथ, तूं खोल कारन अपने साथ।।99।।
मोहे करी सरीखी आप, टालने हम सबों की ताप।
आतम संग भई जाग्रत बुध, सुपनथें जगाए करो मोहे सुध।।100।।
श्रीधनीजी को जोस आतम दुलहिन, नूर हुकम बुध मूल वतन।
ए पांचों मिल भई महामत, वेद कतेबों पोहोंची सरत।।101।।
या कुरान या पुरान, ए कागद दोऊ प्रवान।
याके मगज माएने हम पास, अंदर आए खोले प्राणनाथ।।102।।

Nijanand App

आप भी ना खोले दरबार, सो मुझसे खोलाए कियो विस्तार।
मोहे दई तारतम की करनवार,सो काहूं न अटकों निरधार।।103।।
सब संसे को कियो निरवार, कोई संसा ना रह्या वार के पार।
रोसन करूं लेऊं हुकम बजाए,ब्रह्मसृष्ट और दुनिया देऊं जगाए।।104।।
द्वार तोबा के खुले हैं अब, पीछे तो दुनियां मिलसी सब।
जब द्वार तोबा के मूंदयो, रैन गई भोर जो भयो।।105।।
या भली या बुरी, जिनहूं जैसी फैल जो करी।
तब आगूं आई सबोंकी करनी, जिन जैसी करी आप अपनी।।106।।
तब कोई नहीं किसी के संग, दुख सुख लेवे अपने अंग।
करूं ब्रह्मसृष्ट को मिलाप, अखंड सूर उदे भयो आप।।107।।
विश्व मिली करने दीदार, पीछे कोई ना रहे मिने संसार।
ब्रह्मसृष्ट को पिया संग सुख, सो कह्यो न जाए या मुख।।108।।

Nijanand App

ब्रह्मसृष्ट को ऐसो नूर, जो दुनिया थी बिना अंकूर।
ताए नए अंकूर जो कर, किए नेहेचल देख नजर।।109।।
श्री धनीजीको दीदार सब कोई देख, होए गई दुनियां सब एक।
किनहूं कछुए ना कह्यो, क्रोध ब्रोध काहूको ना रह्यो।।110।।
श्री धनीजी को ऐसो जस, दुनिया आपे भई एक रस।
तेज जोत प्रकास जो ऐसो, काहूं संसे ना रह्यो कैसो।।111।।
सब जातें मिली एक ठौर, कोई ना कहे धनी मेरा और।
पियाके विरहसों निरमल किए,पीछे अखंड सुख सबोंको दिए।।112।।
ए ब्रह्मलीला भई जो इत, सो कबहूं हुई ना होसी कित।
ना तो कई उपज गए इंड, भी आगे होसी कई ब्रह्मांड।।113।।
ए तीन ब्रह्मांड हुए जो अब, ऐसे हुए ना होसी कब।
इन तीनोंमें ब्रह्मलीला भई, बृज रास और जागनी कही।।114।।

Nijanand App

ज्यों नींद में देखिए सुपन, यों बृज को सुख लियो सैयन।
सुपन जोगमाया को जोए, आधी नींद में देख्या सोए।।115।।
कछुक नींद कछुक सुध, रास को सुख लियो या विध।
जागनी को जागते सुख, ए लीला सुख क्यों कहूं या मुख।।116।।
जागनी में लीला धाम जाहेर, निसान हिरदें लिए चित धर।
तब उपज्यो आनंद सबों करार, ले नजरों लीला नित विहार।।117।।
इतहीं बैठे घर जागे धाम, पूरन मनोरथ हुए सब काम।
धनी महामत हँस ताली दें, साथ उठ हँसता सुख ले।।118।।

Nijanand App

मूलमिलावा

इन बिध साथजी जागिए, बताए देऊं रे जीवन।
स्याम स्यामा जी साथजी, जित बैठे चौक वतन।।1।।
याद करो सोई साइत, जो हंसने मांग्या खेल।
सो खेल खुसाली लेय के, उठो कीजे केलि।।2।।
सुरत एकै राखिए, मूल मिलावे मांहें।
स्याम स्यामाजी साथजी, तले भोम बैठे हैं जांहें।।3।।
चौसठ थंभ चबूतरा, इत कठेड़ा बिराजत।
तले गिलम ऊपर चन्द्रवा, चौसठ थंभों भर इत।।4।।
कठेड़ा किनार पर, चबूतरे गिरदवाए।
सोलें थंभों लगता, ए जुगत अति सोभाए।।5।।
चार द्वार चारों तरफों, और कठेड़ा सब पर।
चौसठ थंभों के बीच में, गिलम बिछाई भर कर।।6।।

Nijanand App

कहूं चौसठ थंभों का बेवरा, चार धात बारे नंग।
बने चारों तरफों जुदे जुदे, भए सोले जिनसों रंग।।7।।
चारों तरफ एक एक रंग के, तैसी तरफों चार।
नए नए रंग एक दूजे संग, चारों तरफों चौसठ सुमार।।8।।
ए चार नाम कहे धात के, हेम कंचन चांदी नूर।
ए चार रंग का बेवरा, लिए खड़े जहूर।।9।।
और बारे जवेरों का बेवरा, पाच पांने हीरे पुखराज।
मानिक मोती गोमादिक, रहे पिरोजे बिराज।।10।।
नीलवी और लसनियां, और परवाली लाल।
और रंग कपूरिया, ए रंग बारे इन मिसाल।।11।।
चार द्वार चार रंग के, आठ थंभ भए जो इन।
पाच मानिक और नीलवी, द्वार पुखराज चौथा रोसन।।12।।

Nijanand App

और थंभ दोए पाच के, दोऊ तरफों नीलवी संग।
द्वार नीलवी संग दोए पाच के, करें साम सामी जंग।।13।।
दो थंभ द्वार मानिक के, दोए पुखराज तिन पास।
दोए थंभ द्वार पुखराज के, ता संग मानिक करे प्रकास।।14।।
थंभ बारे भए इन विध, साम सामी एक एक।
यों बारे बने साम सामी, तरफ चारों इन विवेक।।15।।
हीरा लसनियां गोमादिक, मोती पांने परवाल।
हेम चांदी थंभ नूर के, थंभ कंचन अति लाल।।16।।
पिरोजा और कपूरिया, याके आठ थंभ रंग दोए।
गिन छोड़े दोए द्वार से, बने हर रंग चार चार सोए।।17।।
ए सोले थंभों का बेवरा, थंभ चार चार एक रंग के।
सो चारों तरफों साम सामी, बने मिसल चौसठ ए।।18।।

Nijanand App

चारों तरफों चंद्रवा, चौसठ थंभों के बीच।
जोत करे सब जवेरों, जेता तले दुलीच।।19।।
माहें बिरिख बेली कई कटाव, कई फूल पात नकस।
देख जवेर जुगत कई चंद्रवा, जानों के अति सरस।।20।।
इन चौक बिछाई गिलम, तिन पर सिंघासन।
चारों तरफों झलकत, जोत लेहेरी उठत किरन।।21।।
झलकत सुन्दर गिलम, अति सोभित सिंघासन।
यों जोत जमी जवेरन की, बीच जुगल जोत रोसन।।22।।
लाल तकिए ऊपर सोभित, धरे बराबर एक दोर।
नरमों में अति नरम हैं, पसम भरे अति जोर।।23।।
जेता एक कठेड़ा, सब में सुंदर तकिए।
तिन तकियों साथ भराए के, बैठे एक दिली ले।।24।।

Nijanand App

जिन बिध बैठियां बीच में, याही बिध गिरदवाए।
तरफ चारों लग कठेड़े, बीच बैठा साथ भराए।।25।।
किरना उठें नई नई, सिंघासन की जोत।
कई तरंग इन जोत के, नूर नंगों से होत।।26।।
पाइए इन तखत के, उत्तम रंग कंचन।
छे डांडे छे पाइयों पर, अति सुंदर सिंघासन।।27।।
दस रंग डांडों देखत, नए नए सोभित जे।
हर तरफों रंग जुदे जुदे, दसों दिस देखत ए।।28।।
एक तरफ देखत एक रंग, तरफ दूजी दूजा रंग।
यों दसों दिस रंग देखत, तिन रंग रंग कई तरंग।।29।।
तीन डांडे जो पीछले, दो तकिए बीच तिन।
कई रंग बिरिख बेली बूटियां, ए कैसे होए बरनन।।30।।

Nijanand App

चारों किनारें चढ़ती, दोरी बेली चढ़ती चार।
चारों तरफों फूल चढ़ते, करत अति झलकार।।31।।
तिन डांडों पर छत्रियां, अति सोभित है दोए।
माहें कई दोरी बेली कांगरी, क्यों कहूं सोभा सोए।।32।।
दोए कलस दोए छत्रियों, छे कलस ऊपर डांडन।
आठों के अवकास में, करत जंग रोसन।।33।।
नकस फूल कटाव कई, कई तेज जोत जुगत।
देख देख के देखिए, नैनां क्योंए न होए तृपित।।34।।
चाकले दोऊ पसमी, जोत जवेर नरम अपार।
बैठे सुंदर सरूप दोऊ, देख देख जाऊं बलिहार।।35।।
जरे जिमी की रोसनी, भराए रही आसमान।
क्यों कहूं जोत तखत की, जित बैठे बका सुभान।।36।।

Nijanand App

बरनन करूं मैं इन जुबां, रंग नग इतके नाम।
ए सब्द तित पोहोंचे नहीं, पर कहे बिना ना भाजे हाम।।37।।
ए जवेर कई भांत के, सोभित भांत रूप कई।
सो पल पल रूप प्रकासहीं, यों सकल जोत एक मई।।38।।
गिलम जोत फूल बेलियां, जोत ऊपर की आवे उतर।
जोतें जोत सब मिल रही, ए रंग जुदे कहूं क्यों कर।।39।।
ए मूल मिलावा अपना, नजर दीजे इत।
पलक न पीछी फेरिए, ज्यों इस्क अंग उपजत।।40।।
जो मूल स्वरूप हैं अपने, जाको कहिए परआतम।
सो परआतम लेय के, विलसिए संग खसम।।41।।
महामत कहे ऐ मोमिनों, करूं मूल स्वरूप बरनन।
मेहेर करी मासूक ने, लीजो रूह के अन्तस्करन।।42।।

Nijanand App

विरह के प्रकरण

वालो विरह रस भीनों रंग विरहमां रमाड़तो, वासना रुदन करे जल धार।
आप ओलखावी अलगो थयो अमथी, जे कोई हुती तामसियों सिरदार।।1।।

कलकली कामनी वदन विलखाविया, विश्वमां वरतियो हा हा कार।
उदमाद अटपटा अंग थी टालीने, माननी सहुए मनावियो हार।।2।।

पतिव्रता पल अंग थाए नहीं अलगियो, न कांई जारवंतियो विना जार।
पात्रियो पिउ थकी अमें जे अभागणियों, रहियो अंग दाग लगावन हार ।।3।।

स्या रे एवा करम करया हता कामनी, धाम मांहें धणी आगल आधार।
हवे काढ़ो मोहजल थी बूड़ती कर ग्रही, कहे महामती मारा भरतार।।4।।

Nijanand App

हांरे वाला रल झलावियो रामतें रोवरावियो, जुजवे पर्वतों पाड़्या रे पुकार।
रणवगडा मांहें रोई कहे कामनी, धणी विना धिक धिक आ रे आकार ।।1।।

वेदना विखम रस लीधां अमे विरहतणां, हवे दीन थई कहूं वारंवार।
सुपनमां दुख सह्या घणां रासमां, जागतां दुख न सेहेवाए लगार।।2।

दंत तरणां लई तारुणी तलफियो, तमें बाहो दाहो दीन दातार।
खमाए नहीं कठण एवी कसनी, राखो चरण तले सरण साधार।।3।।

हवे हारया हारया हूं कहूं वार केटली, राखो रोतियो करो निरमल नार।
कहे महामती मेहेबूब मारा धणी, आ रे अर्ज रखे हाँसीमां उतार।।4।।

Nijanand App

हांरे वाला बंध पड्या बल हरया तारे फंदडे, बंध विना जाए बांधियो हार।
हंसिए रोइए पड़िए पछताइए, पण छूटे नहीं जे लागी लार कतार।।1।।

जेहेर चढ़्यो हाथ पांउं झटकतियो, सरवा अंग साले कोई सके न उतार।
समरथ सुखथाय साथने ततखिण,गुणवंता गारुडी जेहेर तेहेने तेणी विर्धो झार।।2।।

मार्हे धखे दावानल दसो दिसा, हवे बलण वासनाओं थी निवार।
हुकम मोह थी नजर करो निरमल, मूल मुखदाखी विरह अंग थी विसार।।3।।

छल मोटे अमने अति छेतरया, थया हैया झांझरा न सेहेवाए मार।
कहे महामती मारा धणी धामना, राखो रोतियों सुख देयो ने करार।।4।।

Nijanand App

केम रे झंपाए अंग ए रे झालाओ, वली वली वाध्यो विख विस्तार।
जीव सिर जुलम कीधो फरी फरी, हठियो हरामी अंग इंद्री विकार।।1।।

झांप झालाओ हवे उठतियो अंगथी, सुख सीतल अंग अंगना ने ठार।
बाल्या वली वली ए मन ए कबुर्धो, कमसील काम कां कराव्या करतार।।2।।

गुण पख इंद्री वस करी अबलीस ने, अंगना अंग थाप्यो दई धिकार।
अर्थ उपले एम कहेवाइयो वासना, फरी एणे वचने दीधी फिटकार।।3।।

मांहेले माएने जोपे ज्यारे जोइए, त्यारे दीधी तारुणी तन तछकार।
कलकली महामती कहे हो कंथजी, एवा स्या रे दोष अंगनाओं ना आधार।।4।।

Nijanand App

हांरे वाला कांरे आप्या दुख अमने अनघटतां,ब्राधलगाडी विध विध ना विकार।
विमुख कीधां रस दई विरह अवला, साथ सनमुख मांहें थया रे धिकार ।।1।।

अनेक रामत बीजी हती अति घणी, सुपने अग्राह ठेले संसार।
उघड़ी आंख दिन उगते एणे छले, जागतां जनम रुडा खोया आवार ।।2।।

सनमुख तमसूं विरह रस तम तणो, कां न कीधां जाली बाली अंगार।
त्राहि त्राहि ए वातों थासे घेर साथमां, सेहेसुं केम दाग जे लाग्या आकार।।3।।

विरह थी विछोडी दुख दीधां विसमां, अहनिस निस्वासा अंग उठे कटकार।
दुख भंजन सहु विध पिउ जी समरथ, कहे महामती सुख देंण सिणगार ।।4।।

Nijanand App

हांरे वाला अगिन उठे अंग ए रे अमारड़े, विमुख विप्रीत कमर कसी हथियार।
स्वाद चढ्या स्वाम द्रोही संग्रामें, विकट बंका कीधा अमें आसाधार।।1।।

कुकरम कसाब जुध कई करावियां, पलीत अबलीस अम मांहें बेसार।
जागतां दिन कई देखतां अमने छेतरया, खरा ने खराब ए खलक खुआर।।2।।

ओलखी तमने अमें जुध कीधां तमसूं, मन चित बुध मोह ग्रही अहंकार।
ए विमुख वातों मोटे मेले वंचासे, मलसे जुथ जहां बारे हजार।।3।।

कहे महामती हूं गांऊं मोहोरे थई, पण विमुख विधो वीती सहु माहें नर नार।
धाम माहें धणी अमें ऊंचूं केम जोईसूं, पोहोंचसे पवाड़ा परआतम मोंझार।।4।।

Nijanand App

श्री मेहर सागर

और सागर जो मेहेर का, सो सोभा अति लेत।
लेहेरें आवें मेहेर सागर, खूबी सुख समेत।।1।।
हुकम मेहेर के हाथ में, जोस मेहेर के अंग।
इस्क आवे मेहेर से, बेसक इलम तिन संग।।2।।
पूरी मेहेर जित हक की, तित और कहा चाहियत।
हक मेहेर तित होत है, जित असल है निसबत।।3।।
मेहेर होत अव्वल से, इतहीं होत हुकम।
जलूस साथ सब तिनके, कछू कमी न करत खसम।।4।।
ए खेल हुआ मेहेर वास्ते, माहें खेलाए सब मेहेर।
जाथें मेहेर जुदी हुई, तब होत सब जेहेर।।5।।
दोऊ मेहेर देखत खेल में, लोक देखें ऊपर का जहूर।
जाए अन्दर मेहेर कछू नहीं, आखिर होत हक से दूर।।6।।

Nijanand App

मेहेर सोई जो बातूनी, जो मेहेर बाहेर और माहें।
आखिर लग तरफ धनी की, कमी कछुए आवत नाहें।।7।।
मेहेर होत है जिन पर, मेहेर देखत पांचों तत्व।
पिंड ब्रह्माण्ड सब मेहेर के, मेहेर के बीच बसत।।8।।
दुख रूपी इन जिमी में, दुख न काहूं देखत।
बात बड़ी है मेहेर की, जो दुख में सुख लेवत।।9।।
सुख में तो सुख दायम, पर स्वाद न आवत ऊपर।
दुख आए सुख आवत, सो मेहेर खोलत नजर।।10।।
इन दुख जिमी में बैठ के, मेहेरें देखें दुख दूर।
कायम सुख जो हक के, सो मेहेर करत हजूर।।11।।
मैं देख्या दिल विचार के, इस्क हक का जित।
इस्क मेहेर से आइया, अव्वल मेहेर है तित।।12।।

Nijanand App

अपना इलम जिन देत हैं, सो भी मेहेर से बेसक।
मेहेर सब बिध ल्यावत, जित हुकम जोस मेहेर हक।।13।।
जाको लेत हैं मेहेर में, ताए पेहेले मेहेरें बनावें वजूद।
गुन अंग इंद्री मेहेर की, रूह मेहेर फूंकत माहें बूद।।14।।
मेहेर सिंघासन बैठक, और मेहेर चँवर सिर छत्र।
सोहोबत सैन्या मेहेर की, दिल चाहे मेहेर बाजंत्र।।15।।
बोली बोलावें मेहेर की, और मेहेरै का चलन।
रात दिन दोऊ मेहेर में, होए मेहेरें मिलावा रूहन।।16।।
बंदगी जिकर मेहेर की, ए मेहेर हक हुकम।
रूहें बैठी मेहेर छाया मिने, पिएं मेहेर रस इस्क इलम।।17।।
जित मेहेर तित सब है, मेहेर अव्वल लग आखिर।
सोहोबत मेहेर देवहीं, कहूं मेहेर सिफत क्यों कर।।18।।

Nijanand App

एह जो दरिया मेहेर का, बातून जाहेर देखत।
सब सुख देखत तहां, मेहेर जित बसत।।19।।
बीच नाबूद दुनी के, आई मेहेर हक खिलवत।
तिन से सब कायम हुए, मेहेरै की बरकत।।20।।
बरनन करूं क्यों मेहेर की, सिफत ना पोहोंचत।
ए मेहेर हक की बातूनी, नजर माहें बसत।।21।।
ए मेहेर करत सब जाहेर, सबका मता तोलत।
जो किन कानों ना सुन्या, सो मेहेर मगज खोलत।।22।।
बरनन करूं क्यों मेहेर की, जो बसत हक के दिल।
जाको दिल में लेत हैं, तहां आवत न्यामत सब मिल।।23।।
बरनन करूं क्यों मेहेर की, जो बसत है माहें हक।
जाको निवाजें मेहेर में, ताए देत आप माफक।।24।।

Nijanand App

बात बड़ी है मेहेर की, जित मेहेर तित सब।
निमख ना छोड़ें नजर से, इन ऊपर कहा कहूं अब।।25।।
जहां आप तहां नजर, जहां नजर तहां मेहेर।
मेहेर बिना और जो कछू, सो सब लगे जेहेर।।26।।
बात बडी है मेहेर की, मेहेर होए ना बिना अंकूर।
अंकुर सोई हक निसबत, माहें बसत तजल्ला नूर।।27।।
ज्यों मेहेर त्यों जोस है, ज्यों जोस त्यों हुकम।
मेहेर रेहेत नूर बल लिएं, तहां हक इस्क इलम।।28।।
मीठा सुख मेहेर सागर, मेहेर में हक आराम।
मेहेर इस्क हक अंग है, मेहेर इस्क प्रेम काम।।29।।
काम बडे इन मेहेर के, ए मेहेर इन हक।
मेहेर होत जिन ऊपर, ताए देत आप माफक।।30।।

Nijanand App

मेहेरें खेल बनाइया, वास्ते मेहेर मोमिन।
मेहेरें मिलावा हुआ, और मेहेर फरिस्तन।।31।।
मेहेरें रसूल होए आइया, मेहेरें हक लिए फुरमान।
कुंजी ल्याए मेहेर की, करी मेहेरें हक पेहेचान।।32।।
दई मेहेरें कुंजी इमाम को, तीनों महंमद सूरत।
मेहेरें दई हिकमत, करी मेहेरें जाहेर हकीकत।।33।।
सो फुरमान मेहेरें खोलिया, करी जाहेर मेहेरें आखिरत।
मेहेरें समझे मोमिन, करी मेहेरें जाहेर खिलवत।।34।।
ए मेहेर मोमिनों पर, एही खासल खास उमत।
दई मेहेरें भिस्त सबन को, सो मेहेर मोमिनों बरकत।।35।।
मेहेरें खेल देख्या मोमिनों, मेहेरें आए तलें कदम।
मेहेरें कयामत करके, मेहेरें हँसके मिले खसम।।36।।

Nijanand App

मेहेर की बातें तो कहूं, जो मेहेर को होवे पार।
मेहेरें हक न्यामत सब मापी, मेहेरें मेहेर को नाहीं सुमार।।37।।
जो मेहेर ठाढ़ी रहे, तो मेहेर मापी जाए।
मेहेर पल में बढ़े कोट गुनी, सो क्यों मेहेरें मेहेर मपाए।।38।।
मेहेरें दिल अर्स किया, दिल मोमिन मेहेर सागर।
हक मेहेर ले बैठे दिल में, देखो मोमिनों मेहेर कादर।।39।।
बात बडी है मेहेर की, हक के दिल का प्यार।
सो जाने दिल हक का, या मेहेर जाने मेहेर को सुमार।।40।।
जो एक वचन कहूँ मेहेर का, ले मेहेर समझियो सोए।
अपार उमर अपार जुबांए, मेहेर को हिसाब न होए।।41।।
निपट बड़ा सागर आठमा, ए मेहेर को नीके जान।
जो मेहेर होए तुझ ऊपर, तो मेहेर की होय पेहेचान।।42।।

Nijanand App

सात सागर बरनन किए, सागर आठमा बिना हिसाब।
ए मेहेर को पार न आवहीं, जो कई कोट करूँ किताब।।43।।
ए मेहेर मोमिन जानहीं, जिन ऊपर है मेहेर।
ताको हक की मेहेर बिना, और देखें सब जेहेर।।44।।
महामत कहे ऐ मोमिनों, ए मेहेर बड़ा सागर।
सो मेहेर हक कदमों तले, पिओ अमीरस हक नजर।।45।।

Nijanand App

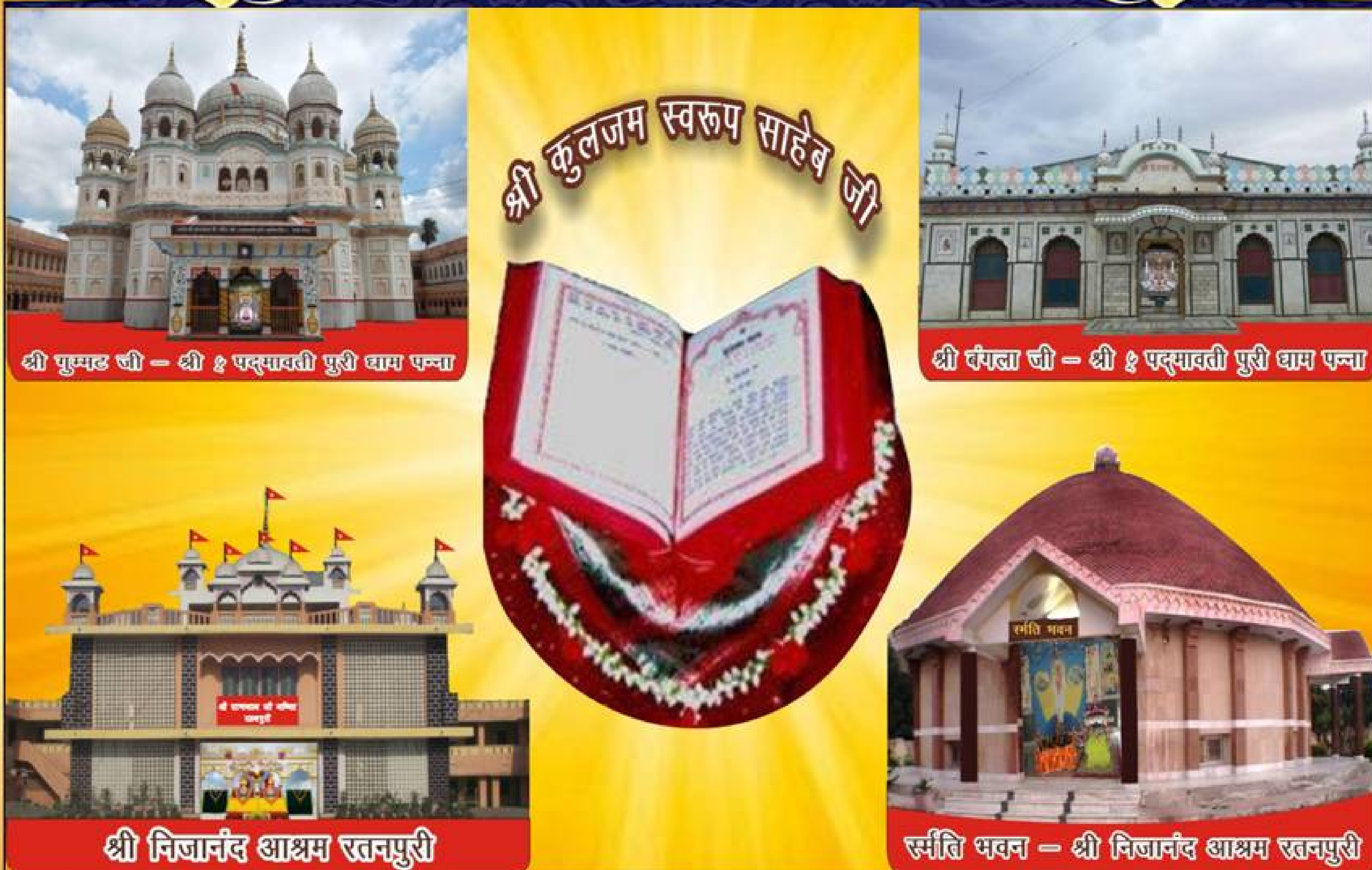
श्री कुलजम स्वरूप साहेब जी
श्री गुम्मट जी – श्री ५ पद्मावती पुरी धाम पन्ना
श्री बंगला जी – श्री ५ पद्मावती पुरी धाम पन्ना
श्री निजानंद आश्रम रतनपुरी
स्र्मति भवन – श्री निजानंद आश्रम रतनपुरी